iv. 15. 7 (643. 9); AnekāTi. 4. 27; **2 C** a ray in general, of any shining object (like a precious stone, gold, fire, sword) or of parts of body (like the eye, teeth, feet, nail) or of virtue, fame; lustre, brightness परराष्ट्रेषु विख्याता नयबुद्धिगुणांशुभिः Rāmā. i. *267; निस्त्रिंशांशुप्रतानप्रदलितनिखिलारातिघोरान्धकारः EI. xx. 43. 2; यशोंऽशुशुक्लीकृतसप्तविष्टपात् Kād. 4. 19; HammīMaKā. 3. 77; चञ्चलानां चक्षुषामंशुभिः कृष्णसारमया इवासन्वासराः HarṣaC. 190. 12; चरणतलगतैरंशुभिः शोणशोभः CaṇḍiS. 96; वापीष्वन्तर्लीनमहानीलदलासु। शस्त्रीश्यामैरंशुभिः ··· अम्भश्छायामच्छामृच्छति नीलीसलिलस्य SiśuVa. 4. 44 (comm. शस्त्रीवच्छ्यामैरंशुभिरन्तर्गतेन्द्रनीलमरीचिभिः); परिवीतमंशुभिः Kirātā. 12. 18 (comm. अंशुभिस्तेजोभिः); अपाङ्गभागपातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पलम्। स्पृश्यते वा न वा··· Kāvyāda. 2. 225; ···नखांशुजटिलं पदं विष्णोः EI. iii. 51. 1; आयुरैश्वर्यादीनां विलसितमचिरांशु[चं]चलमवगच्छद्भिः···परिपालनीयम् EI. xxv. 291. 29; x. 104. 31; etc.; अप्सूर्ध्वदर्शिनां नित्यं द्वेधा चक्षुः प्रवर्तते। एकमूर्ध्वमधस्ताच्च तत्रोर्ध्वांशुप्रकाशितम् TattvSaṁ. 2221; रत्नांशुवलयेन···हस्तेन YaśasCam. ii. 27. 6; अनवरतयक्षविक्षिप्यमाणोभयपक्षचामरपरम्परांशुजालधवलितः YaśasCam. ii. 381. 24; नम्रामरकिरीटांशुपरिवेषनभस्तले YaśasCam. ii. 396. 9; तं (तरुं) मूलतः पल्लवितमिव कुर्वाणमंशुभिः TriṣaSaPuC. i. 6. 125; इन्दीवरश्रीनयनांशुवन्दी Yātrā-Pra. 1. 13; वक्त्रेशो बिसकान्तिभिर्विजगले डिण्डीरखण्डांशुभिः YātrāPra. 2. 93; मल्लदेवयशसा गलहस्तो हस्तिमल्लदशनांशुषु दत्तः EI. viii. 209. 7; मणयः प्रचिक्षिपुः··· कटाक्षानिव दीर्घारुणानंशून् TilaMañ. 92. 3; तरलतरलैरंशुभिर्विस्फुरन्तः···कटाक्षक्षुरप्राः SubhāRaK. 23. 45; इन्द्रायुधांशुविसृतिविच्छुरितान्तरीक्षम् YuktiKa 98. 7; धर्तेऽंशुभिः समालब्धां भर्गनेत्रहविर्भुजः SrīKaC. 4. 11; सौवर्णं पुरमभ्युपैति निकटं यस्योत्कटैरंशुभिः TripuDi. 4. 11; अंशुभिः···अन्धकारं हरतु हरशरोद्गारजन्मानलो वः SaduktiKa. 14. 1; श्रीसनातनसुमणिरत्नमंशुभिरपि चण्डम् StavMā. 284. 23; पाण्डरैरंशुभिर्जगच्छादकत्वात् पाण्डरवासस्त्वम् SrutaPra. ii. 139. 21 (*on* i. 4. 18); **3** the sun वरुणः सागरोंऽशुश्च (listed among the 108 names of the sun) Mahā-Bhā. iii. 3. 21; अंशुर्विवस्वांस्त्वष्टा च सविता विष्णुरेव च (listed among the 12 suns) BrahmāṇḍP. i. 24. 34; चैत्रे मासि तु देवोंऽशुः BrahmāṇḍP. i. 24. 35; अंशुत्वमंशुधारित्वात् ViṣṇuDhaP. i. 30. 18; पूष्णे भगाय मित्राय पर्जन्यायांशवे नमः (names of अर्क) BhaviP. i. 71. 5 (124A. 13); महदर्णो वेगात्पृष्टं वांशुभिरंशोर्हि शुष्येत् IśānSiPa. i. 7. 35; ii. 9. 27; पूर्वाचले धातुवपूंषि वप्राण्यर्णा उद्यान्त्यघल्त्युरंशोः DvyāśraKā. 2. 38; 18. 2; चन्द्रांशवोः सहस्राणि षोडश TriṣaSaPuC. ii. 3. 546; **4** the moon तं पूर्वपक्ष आप्याययन्ति। तथापि निगमो भवति। यथा देवा अंशुमाप्याययन्तीति Nir. 5. 11; (Durga यथा येन प्रकारेण देवाः सूर्यस्य रश्मयः अंशुं सोममाप्याययन्ति पूर्वपक्षे। Skanda-Mahe. तथा देवास्ता एव रश्मयोऽंशुं चन्द्रमसं पूर्वपक्षे आप्याययन्ति। cf. यथादित्या अंशुमाप्याययन्ति MaiS. iv. 9. 27; यं देवा अंशुमाप्याययन्ति···AV. vii. 81. 6; यमादित्या अंशुमाप्याययन्तीति TaiS. II. iii. 5. 3; iv. 14. 1; TaiBr. III. i. 3. 1); Vaija. 19. 26; NānārthāSaṁ i. 47. 57; **5 A** strand of a cob-web कोषकारो यथा ह्यंशूनुपादत्ते वधप्रदान् CaraS. iv. 1. 96 (1941 Ed.); ऊर्णनाभ इवांशूनां स हेतुः किल जन्मिनाम् TattvSaṁ. 154; **5 B** a very thin fibre forming the constituent (*avayava*) of a thread यदा तन्त्वोः संयोगे सत्यन्यतरतन्त्वारम्भके अंशौ कर्मोत्पद्यते तेन कर्मणा अंश्वन्तराद्विभागः क्रियते PadārthaSaṁ. 141. 10; तन्तवः स्वावयवेषु अंशुषु पटः तन्तुषु Nyāy-Vār. 49. 5 (*on* i. 1. 5); तथा तन्तुष्वंशवोंऽशुषु तदवयवाः (प्रत्यक्षमुपलभ्यन्ते) BrahmSūBh.(Sañ.) 317. 19 (*on* ii. 1. 15); तन्तवश्च अंशूनपेक्ष्य स्थूला अनित्याश्च भवन्ति BrahmSūBh.(Sañ.) 373. 7 (*on* ii. 2. 15); तन्तुभिः पटः क्रियते न तन्त्ववयवैरंशुभिः NyāyMañ. ii. 73. 30; NyāyKa. 150. 24; NyāyKuA. ii. 96. 8; सूक्ष्मात्खलु स्थूलस्योत्पत्तिर्दृश्यते यथा तन्तुभिः पटस्यैवमंशुभ्यस्तन्तूनाम् Bhām. 394. 4 (*on* ii. 2. 10); Kiraṇā. 66. 3 (BSS.); 230. 14 (BSS.); पटाद्यान्तरस्तन्तुस्तन्तोरप्यंशुरान्तरः PañcDa. 6. 166; Upask. 326. 11 (*on* vii. 2. 9); 332. 2 (*on* vii. 2. 10); Nyāyāmṛ. 2. 8; AdvaiSi. 757. 10; SivārkaMaDī ii. 24. 22 (*on* ii 1. 16); ii. 74. 10 (*on* ii. 2. 12); SiddhāLeSaṁ. 425. 2; GuruCan. i. 93. 21; Vaija. 214. 6; AnekāSaṁ 2. 530; NānārthāSaṁ. i. 47. 57 etc. etc.; **5 C** fibre of a bark अंशूनां नाडीवादिवल्कलजातीनां सूत्राणाम् ManvaVi. 669. 2 (*on* 5. 120); अंशुपट्टो वल्कलविशेषः Nandana. 669. 10; **6 A** Proper name of a *ṛṣi*, protégé of Aśvinā यथोत धृत्व्ये धनेंऽशुं गोष्वगस्त्यम् ṚV. viii. 5. 26; **6 B** of a Vedic teacher belonging to Sāmaveda, son of Dhanaṁjaya सुतेमनाः शाण्डिल्यायनोऽंशोर्धानंजय्यात् VaṁśBr. 1. 27; **6 C** of Siva (अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे शृणु) रौद्ररूपोंऽशुरादित्यो MahāBhā. xiii. 17. 65; **6 D** of one of the twelve Ādityas often enumerated in the Purāṇas अंशुर्भगश्चातितेजा आदित्या द्वादश स्मृताः ViṣṇuP. i. 15. 131; (one of the Divākaras = Ādityas) KūrmaP. 42. 2 (1. 4); LiṅgaP. i. 55. 25; (as Bhānus) PāñcaRā.-(Nā.) iii. 4. 12; BṛBrahmS. iii. 10. 22; (born of Aditi and Kaśyapa) आदित्यां कश्यपात्पुनः।···मित्रोऽथ वरुणो भगः। अंशुश्च द्वादशादित्या आसन् वैवस्वतेऽन्तरे AgniP. 19. 3; (included in the different names of *ravi*) SkandP. I. ii. 51. 66; SkandP. I. ii. 5. 77; NaraP. 5. 51; (the Ādityas, and some others, constitute the Sauragaṇa for the month of Mārga-śīrṣa) अथांशुः कश्यपस्तार्क्ष्य ऋतसेनस्तथोर्वशी। विद्युच्छत्रुर्महाशङ्खः सहोमासं नयन्त्यमी BhāgP. xii. 11. 41; BṛPārāSm. 2. 191; (for month of Caitra) चैत्रे मासि भवेदंशुः LiṅgaP. i. 59. 32; SaurP. 28. 14; अंशुना विष्णुमंसस्थं ···विन्यसेत् SāraTi. 15. 14 (comm. द्वादशादित्यसहिताः केशवाद्याः द्वादशमूर्तीः देहे वक्ष्यमाणविधानतः क्रमाद् विन्यसेदिति संबन्धः); **6 E** of one of the deities forming the *devagaṇa* called Harita पर्वतानुचरश्चैव अपोंऽशुश्च मनोजवः।···दशैते हरिताः स्मृताः VāyuP. ii. 38. 89; **6 F** of one of the companions of Kṛṣṇa in Vraja हे स्तोकक्रुष्ण हे अंशो श्रीदामन् BhāgP. x. 22. 31; **6 G** of the doorkeeper of Kṛṣṇa (द्वारपालान् ददर्श) अंशुं बलं च सुबलम् SkandP. II. ix. 16. 52; **6 H i** of a prince, son of Purumitra पुरुमित्रः···ततश्चांशुः ViṣṇuP. iv. 12. 43; **6 H ii** sharer of the property of Priyagotra अनेोस्तु प्रियगोत्रोऽभूदंशुस्तस्य च रिक्थभाक् KūrmaP. 256. 17 (1. 24); **6 H iii** son of Purutvat and Bhadravatī अंशुर्जज्ञे च वैदर्भ्यां भद्रवत्यां पुरुत्वतः LiṅgaP. i. 68. 48; **7** rein, in the word प्रत्यंशु explained as प्रतिगता अंशवोऽस्य प्रत्यंशुरयमुष्ट्रः KāśiVṛ. *on* P. vi 2. 193; Prasā. ii. 784. 15; **8** a small portion cf. **अंशुपात**; **9** bristle cf. **अंशुमत्**; **10** the Lexicons mostly give the meanings i) a thin constituent of a thread etc. (सूत्रादिसूक्ष्मांश or तन्त्वादि–), ii) ray (किरण, रश्मि, घृणि), iii) sun (रवि, दिवाकर, चण्डदीधिति), to which some add iv) light, lustre (द्युति, प्रभा, त्विष्, प्रकाश) AmaK. 210; Vaija. 214. 6; 18. 15; VisvaPra. 112. 26; 168. 12; AnekāSaṁ. 2. 530; 2. 542; AbhidhāCi. 95; 99; Liṅgānu.(He.) 10. 1; Nānārthā Saṁ. i. 47. 57; NāmMā. 45; AgniP. 359. 32; NānārthRaMā. 1085; NānārthMa. 355; SabdaRaSaK. 325. 1; SabdaRa.(Bā.) 3833, 3976, 4015, 4061; KoṣaKaTa. 1. 649, 1. 683; AnekāSa. 550; ParaNā 277; NānārthSaṁ. 25. 22; 46. 22; 83. 56; VisvaLok. 245. 26; 371. 3; KāryKaVṛ. 87. 26 (3. 5); KalpaK. 437. 16; 473. 113. MediK. 176. 2; Visva (in SabdaKaDru.); AnekāTi. 2. 5; 2. 210; BhaviP. i. 78. 18 (131B. 10); VisvaPra. 168. 12; v) ray of the sun AbhidhāCi. 99; NānārthaMa. 665; ParaNā. 2597; MediK. 176. 2; AnekāTi. 2. 5; SabdaRa. (Su.) 2. 6; vi) a portion of creepers etc. लतादिनः [? *n.*] एकदेशे NānārthāSaṁ. i. 47. 57; vii) a small portion लेशे (=अंश ?) DharK. 2579; VisvaPra. 168. 12; Visva in SabdaKaDru.; comm. by ज्ञानविमलगणि on SabdaBhePra.(Ma.) 3. 17; viii) serpent (?) (भुजग) SabdaRa-(Su.) 2. 6; ix) dress, attire (वेश) Dharaṇī in SabdaKaDru. (= अंशुक ?); x) straight (ऋजु) according to Vararuci as stated in NānārthāSaṁ. i. 53. 121; xi) bird SabdaRa. (Bā). 1573; in the Koṣas अंशु is listed among the meanings of i) वसु Vaija. 236. 78; AnekāK. 918; SiddhāKau. on Uṇā. 1. 10; ii) शिखी Vaija. 218. 60; NānārthāSaṁ. i. 159. 1371; iii) पद Vaija. 225. 18; NānārthāSaṁ. i. 36. 37; iv) अग्र Vaija. 270. 60; v) हेति Vaija. 223. 46; vi) शुक्र NānārthāSaṁ. i. 160. 1381; vii) पाद NānārthaMa. 843; viii) मा AnekāSaṁ. 1. 9. ix) वीर्य NānārthaSaṁ. 83. 56.

अंशुक (aṁśu-ka) *n.* rarely *m.* in the sense of cloth cf. RājTa.(Srī.) 1. (7) 85 [from *aṁśu* which is included in the *ṛśyādigaṇa* on P. iv. 2. 80 after KāśiVṛ. and accented on the last syllable, which does not agree with the *cāturarthika* meaning of the suffix; cf. Liṅgānu.(Va) 54; SabdaBhePra. (Ma.) 3. 12; Liṅgānu. (Sā.) 118. 13; Liṅgānu. (He.) 64. 1; Liṅgānu. (Pā.) 105. 13; Liṅgānu.(Vā.) 5. 23; GaṇRa. 4. 280 (*m.*), 4. 293; SiddhāKau. 248A. 7; the distinction between a piece of cloth and a garment and between fine and rough cannot always be decided. PW and APTE give the meaning 'leaf' based on the passages कल्पलतांशुकेषु Sāk. 7. 5 and कल्पवृक्षांशुकानि MeghDū. 62; MW 'tie (for binding a churning stick)' is not traceable.] **1 A** fine cloth or garment **B** a silken garment **C** a piece of cloth, a garment **D** a piece of cloth attached to a staff, a flag **E** a lower garment, an inner garment **F** an upper garment **G** a piece of cloth to cover the face, a veil **H** a piece of white cloth **2 A** the leaf of Tamāla **B** the plant Granthiparṇa **3** a ray, beam **4** a moulding of the pedestal **5** a thread, streak. **1 A** fine cloth or garment दृष्ट्वांशुकं काञ्चनहंसचिह्नं वन्यं स धीरोऽभिचकाङ्क्ष वासः BuddhaC. 6. 59; चीराण्यपास्य दधिरे पुनरंशुकानि Saund. 7. 51; संयोगश्चेष्टाभिः क्षौमिः शीतोपहितांशुकस्रग्धारिणीभिः CaraS. iii. 6. 17 (1922 Ed.); धुन्वन्कल्पद्रुमकिसलयान्यंशुकानीव वातैः MeghDū. 62; यस्मिन्महीं शासति···वातोऽपि नास्रंसयदंशुकानि RaghuVa. 6. 75; PadyaVe. 109; अंशुकस्य निशि रक्षणाकुला JānaHa. 8. 12; 8. 26; तस्य हि गच्छतो यदृच्छया कथमप्यंशुकमिव मार्गलतासु मानसमसासु